डेंजर स्कूल से एक चित्र

योग्यता का समाज शास्त्र

डॉ. अमन मदान

योग्यता यानी मेरिट की अवधारणा आजकल काफी चर्चा में है। यह शिक्षा में उत्कृष्टता के हमारे विचारों के केंद्र में होती है। इसके अलावा आरक्षण सम्बंधी बहस में भी यह मुद्दा केंद्र में है। मगर अधिकांश लोग योग्यता के विचार को बहुत सरल रूप में लेते हैं। कोई छात्र किसी परीक्षा में टॉप पर आए तो कहा जाएगा कि वह योग्य है जबकि अन्य में योग्यता नहीं है। अलबत्ता समाज वैज्ञानिक लोग इस बारे में काफी अलग ढंग से सोचते हैं। मामला उतना सीधा नहीं है जितना नज़र आता है।

सारे इन्सान उच्चतर श्रेष्ठता हासिल करने की लगभग बराबर क्षमता के साथ पैदा होते हैं। जब सारे लोग बराबर पैदा हुए हैं तो क्यों जीवन में गैर-बराबर हो जाते हैं। इस सवाल की पड़ताल सामाजिक व सांस्कृतिक नज़रिए से करना ज़रूरी है क्योंकि योग्यता कम से कम एक व्यक्ति का निजी गुण तो कदापि नहीं है।

वैसे तो सारे समाज वैज्ञानिक इस बात को पूरी तरह स्वीकार नहीं करते कि सारे इन्सान बराबर पैदा हुए हैं। मगर यदि आप कुछ विचित्र उदाहरणों को छोड़ दें, तो सारे इन्सान उच्चतर श्रेष्ठता हासिल करने की लगभग बराबर क्षमता के साथ पैदा होते हैं। यदि लोगों को खूब प्रोत्साहन मिले, ऊंचे लक्ष्य निर्धारित किए जाएं और पर्याप्त संसाधन दिए जाएं तो वाकई अधिकांश लोग बढ़िया प्रदर्शन कर सकते हैं।

तो मुख्य समस्या यह है कि जब सारे लोग बराबर पैदा हुए हैं तो क्यों जीवन में आगे चलकर गैर-बराबर हो जाते हैं। यदि सारे लोग कमोबेश बराबर पैदा हुए हैं, तो ऐसा क्यों होता है कि हर साल कुछ ही छात्र आई.आई.टी. में प्रवेश कर पाते हैं? हर कक्षा में हमेशा कुछ छात्र ऐसे होते हैं जिनका प्रदर्शन शेष से बेहतर होता है। इसका क्या अर्थ लगाया जाए? प्रचलित जवाब यह है कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कुछ लोग कुदरती तौर पर ज़्यादा प्रतिभावान होते हैं। मगर ऐसे ही अन्य प्रचलित उत्तरों की तरह इसमें भी कई परतें छिपी हुई हैं। जितना दिखता है, उससे कहीं अधिक छिपा रहता है।

नस्लवादी लोग कहेंगे कि योग्यता में अंतर नस्लों के बीच अंतरों के कारण होता है। यह सही है कि विभिन्न समुदायों के बीच, या स्त्री-पुरुषों के बीच छिट-पुट जैविक अंतर होते हैं। मगर जैविक लाभ को साकार रूप लेने के लिए सहायक माहौल की ज़रूरत होती है। इसी से तय होता है कि वह जैविक लाभ कितना विकसित हो पाएगा। इस मामले में जीव विज्ञान की बजाय समाज कहीं अधिक महत्वपूर्ण किरदार है। इसके अलावा एक तथ्य यह भी है कि जैविक लाभ, उदाहरण के लिए बढ़िया क्रिकेटर बनने के लिए आवश्यक गुणों में से कुछेक गुणों के संदर्भ में ही लागू होता है। जैसे सचिन तेंदुलकर बनने के लिए शायद मांसपेशियों में बढ़िया तालमेल के साथ पैदा होने के अलावा व्यक्ति में लगन, नियमितता, खेल की बढ़िया समझ, रणनीति की समझ, फालतू आलोचना को अनदेखा करने की क्षमता और साहस जैसे गुणों की भी दरकार होगी। ये और इस तरह की अन्य खूबियां इन्सान समाज में परवरिश व तमाम किस्म के अनुभवों के ज़रिए सीखता है। जैविक धरातल तो मात्र एक मंच की तरह है जिस पर समाज व संस्कृति अपने किरदार निभाते हैं। मगर यह मंच अपने आप में निर्णायक नहीं है।

योग्यता में अंतर की ज़्यादा सटीक व्याख्या यह होगी

कि लगभग सब लोग सीखने की लगभग बराबर क्षमता के साथ जन्म लेते हैं मगर सामाजिक माहौल में अंतर से यह क्षमता अलग-अलग रूप ले लेती है। परीक्षाएं इन सारी क्षमताओं को नहीं बल्कि इनमें से कुछ क्षमताओं को जांचने के लिए आयोजित होती हैं।

तो योग्यता वह नहीं है, जो वह नज़र आती है। कम से कम यह एक व्यक्ति का निजी गुण तो कदापि नहीं है। यह इस बात से भी निर्धारित होती है कि व्यक्ति किस तरह के समुदाय से है और उस समुदाय का इतिहास क्या है। इतिहास ने जो अंतर पैदा किए हैं, वे बहुत महत्व रखते हैं। यह सही है कि व्यक्तिगत इच्छाशक्ति बहुत महत्वपूर्ण है - अपने आपको धकेलने की इच्छा, कड़ी मेहनत करने की इच्छा, योजनाबद्ध व चुनिंदा ढंग से काम करने की इच्छा। मगर यह इच्छाशक्ति भी ऐतिहासिक रूप से निर्मित एक माध्यम के ज़रिए अभिव्यक्त होती है। नियमित रूप से एक जगह बैठकर किताबों पर ध्यान लगाना उन समुदायों के लिए आसान होता है जिनमें धार्मिक पुस्तकें पढ़ने की संस्कृति रही है। यह गुण उन समुदायों में मिलना मुश्किल है जिनमें कुछ भी नहीं पढ़ा जाता और वे शायद अपने धर्म को गीतों और नृत्यों के रूप में व्यक्त करते आए हैं या जिन्हें ऐतिहासिक रूप से पढ़ने की मनाही रही है। वैसे सही माहौल मिलने पर किताबें पढ़ने में नियमितता जल्दी ही आ जाती है। मगर यह नहीं भूलना चाहिए कि सभी व्यक्ति अपना जीवन सांस्कृतिक व सामाजिक प्रभावों के ताने-बाने के तहत व्यतीत करते हैं। इस ताने-बान के कुछ धागे हमें रोकते हैं जबकि कुछ धागे हमें आगे खींचते हैं।

शिक्षा के समाज विज्ञान का एक अहम योगदान यह रहा है कि इसने काफी विस्तार में यह उजागर किया है कि हमारा सामाजिक माहौल प्रतिभा को किस तरह प्रभावित करता है। इस माहौल का सबसे बुनियादी व प्रत्यक्ष असर आर्थिक व राजनैतिक गैर-बराबरी के माध्यम से होता है।

आज भी हमारी एक-तिहाई आबादी बमुश्किल दो वक्त की रोटी का जुगाड़ कर पाती है। आर्थिक संसाधनों तक उनकी पहुंच बहुत कम है और राजनैतिक गुट अक्सर उनकी अवहेलना करते हैं। ऐसी हताशाजनक स्थिति में जीते हुए उन्हें स्कूल में पहुंचने और नियमित रूप से उपस्थित रहने के लिए काफी संघर्ष करना होता है। अपनी प्रतिभा और क्षमता को योग्यता में बदलने के लिए उन्हें काफी विपरीत परिस्थितियों में जूझना पड़ता है। ये प्रतिकूलताएं कितनी विकट हैं, यह इसी तथ्य से उजागर हो जाता है कि मात्र 15 प्रतिशत बच्चे बारहवीं कक्षा तक पहुंच पाते हैं। तो जब हम विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षाओं की बात करते हैं तो यह याद रखना ज़रूरी है कि 85 प्रतिशत बच्चे तो इन प्रवेश परीक्षाओं में आवेदन करने के भी पात्र नहीं हैं, अपनी प्रतिभा को दर्शाने की बात तो बाद में आती है। शायद यह कहना गलत न होगा कि भारत में प्रतिभा की सबसे बड़ी दुश्मन गैर-बराबरी है।

यह कहना गलत न होगा कि भारत में प्रतिभा की सबसे बड़ी दुश्मन गैर-बराबरी है।

इस बात का काफी अध्ययन हुआ है कि व्यक्ति की प्रतिभा और क्षमता की पूर्ण अभिव्यक्ति में गरीबी और गैर-बराबरी किस ढंग के अवरोध पैदा करती है। एक मायने में तो सरकारी स्कूल भी पूरी तरह निशुल्क नहीं हैं। राष्ट्र संघ विकास कार्यक्रम के संतोष महरोत्रा के नेतृत्व में किए गए एक ताज़ा अध्ययन से पता चला है कि ग्रामीण भारत के सबसे गरीब लोगों को स्कूली शिक्षा पर कितना पैसा जेब से खर्च करना पड़ता है। यह खर्च विभिन्न राज्यों में अलग-अलग है मगर यह गरीब लोगों की कई दिनों की मज़दूरी के बराबर होता है। यह अध्ययन सिर्फ प्राथमिक स्कूल के स्तर का था। इसमें यह भी जोड़ना होगा कि यदि ये बच्चे स्कूल न जाते तो जब वयस्क लोग मज़दूरी करने जाते तो ये घर पर छोटे भाई बहनों की देखभाल करते। कई अध्ययनों से पता चला है कि जब कोई परिवार कक्षा 5 के बाद अपने बच्चे के भविष्य के बारे में सोचता है, तो उसे बहुत कठिन निर्णय लेने होते हैं। इस जद्दोजहद में सबसे ज़्यादा नुकसान लड़कियों का और उन जातियों के बच्चों का होता है जिनके साथ ऐतिहासिक रूप से भेदभाव होता आया है।

योग्यता हासिल करने के अवसर से वंचित रहने का

एक कारण स्कूल तक भौतिक पहुंच का भी है। स्कूल पहुंचने के लिए कितनी दूर जाना पड़ता है, इस बात से देश के करोड़ों बच्चों का भविष्य तय होता है। फिर प्राथमिक के बाद माध्यमिक शाला जाना होता है जो और दूर होती है। हमारे देश में माध्यमिक स्कूलों की संख्या प्राथमिक स्कूलों से एक-तिहाई है। हमारे देश के सबसे बहादुर सिपाहियों - हमारे प्राथमिक स्कूल शिक्षकों - ने एक नियम सा बनाया है कि यदि माध्यमिक शाला उसी गांव में नहीं है तो आधे बच्चे सिर्फ इसी कारण से स्कूल छोड़ देंगे। और यह जानने के लिए किसी महान योग्यता की ज़रूरत नहीं है कि यहां भी सबसे बुरा प्रभाव लड़कियों और संसाधन विहीन जातियों के बच्चों का होता है। यही प्रक्रिया हाई स्कूल और हायर सेकंडरी स्कूल के स्तर पर भी दोहराई जाती है।

जब कोई परिवार कक्षा 5 के बाद अपने बच्चे के भविष्य के बारे में सोचता है, तो उसे बहुत कठिन निर्णय लेने होते हैं। इस जद्दोजहद में सबसे ज़्यादा नुकसान लड़कियों का और उन जातियों के बच्चों का होता है जिनके साथ ऐतिहासिक रूप से भेदभाव होता आया है।

कौन योग्यता हासिल कर सकता है, कौन नहीं, इस पर उपरोक्त प्रक्रिया के असर को समझने के लिए अमर्त्य सेन का उदाहरण ले सकते हैं। उनका जन्म विद्वान अध्ययनशील पालकों के घर हुआ था और उन्हें देश के सर्वोत्तम शिक्षा संस्थान शांति निकेतन में पढ़ाई करने का अवसर मिला था। बेशक वे एक ज़बर्दस्त व्यक्ति हैं, जो विचारों की स्पष्टता व उद्देश्य की दृढ़ता के धनी हैं। मगर यह उनके जन्म का नहीं बल्कि उन्हें मिले अवसरों का परिणाम है। गौरतलब बात है कि आज देश के 8 में से मात्र एक युवा ही कक्षा 12 तक पहुंच पाता है। क्या आपको लगता है कि यदि अमर्त्य सेन आज के भारत में पैदा हुए होते तो वे अपनी सफलता को दोहरा पाते? मेरा ख्याल है कि खुद प्रोफेसर सेन कहेंगे कि आज परिस्थितियां इसके लिए बहुत प्रतिकूल होतीं।

हमारे देश में प्रतिभा की उपेक्षा और योग्यता के निर्माण का मामला बहुत पेचीदा है। सामाजिक परिवेश अत्यंत जटिल व सूक्ष्म तरीकों से काम करता है। संस्कृति - समुदाय की संस्कृति और स्कूल की संस्कृति - वह कारक है जो बहुत महत्वपूर्ण है मगर जिसे बहुत कम समझा गया है। अगले अंक में उसी की बात करेंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत सितंबर 2006
अंक 212

- **दवाइयां स्त्री-पुरुष भेद करती हैं**
- **नई दवा नीति**
- **गरीबों में मोटापा**
- **बर्ड फ्लू से सबक**
- **उपवास में क्या खाएं, क्या न खाएं**